मिश्रित क्षमता वाली कक्षा में समय का नियोजन

सतवीर सिंह चौहान

मैं कक्षा-1 और कक्षा-2 में भाषा और गणित पढ़ाता हूँ। जिसमें सात घण्टे विद्यार्थियों के साथ कक्षा में काम करने और अलग से एक घण्टा उन्हें अतिरिक्त शिक्षण के लिए दिया जाता है।

पिछले साल मैंने स्कूल में एक ओपन लाइब्रेरी शुरू की। मैं स्कूल जल्दी पहुँच जाता हूँ और यदि कोई विद्यार्थी जल्दी आ जाते हैं तो मैं उन्हें कुछ पढ़कर सुनाता हूँ, नई किताबों से उनका परिचय करवाता हूँ और उन्हें कहानियाँ सुनाता हूँ। इस दौरान मैं ख़ुद भी पढ़ता हूँ या कभी-कभार इस समय को मैं क्लास की लाइब्रेरी व्यवस्थित करने, नए चार्ट बनाने, TLM बनाने/जमाने या ऐसे ही अन्य काम को करने में लगाता हूँ।

सप्ताह के 3 दिन स्कूल की शुरुआत आधे घण्टे की प्रार्थना सभा से होती है, बाक़ी के 3 दिन विद्यार्थियों के व्यवहारगत एवं कक्षाओं के मुद्दों पर और स्कूल के नियमों पर चर्चा होती है। इसका अगला आधा घण्टा हर रोज़ किताबें पढ़ने के लिए होता है। लाइब्रेरी में बच्चों की पढ़ने की क्षमता अनुरूप ही किताबें हैं ताकि वे अपने पसन्द की किताब चुनें और पढ़ें। मैं उन बच्चों के बाजू में ही बैठता हूँ जिन्हें पढ़ना कठिन लगता है। इसके बाद सुबह 10 से 10:15 का समय नाश्ते का होता है।

एक बहु–स्तरीय कक्षा के लिए योजना

मैं कक्षा-1 और 2 के विद्यार्थियों के साथ काम करते हुए दिन के पाँच पीरियड बिताता हूँ। भाषा सीखने के लिए दोनों ही कक्षाओं के लिए दो पीरियड रहते हैं और दो दिन के अन्तराल में एक अतिरिक्त पीरियड भाषा अध्ययन के लिए रहता है।

सीखने के स्तर का आकलन

मेरी कक्षा-1 में 28 में से 11 विद्यार्थी नए हैं, इसलिए स्कूल शुरू होने के 10–15 दिन बाद तक हमने कुछ ऐसी गतिविधियाँ कीं जो कि आमतौर पर पूर्व–प्राथमिक कक्षाओं के लिए होती थीं। इनमें लिखित और मौखिक कार्य शामिल थे जिनसे मुझे बच्चों के सीखने के स्तर का पता लगाने में मदद मिली।

एक शिक्षक को कक्षा के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का आकलन कर लेना चाहिए, समूह बना लेना चाहिए और उसके बाद ही उनके साथ काम करना चाहिए। इसके बाद, यह बात महत्त्वपूर्ण है कि कक्षा के समय का बँटवारा कैसे किया जाए क्योंकि शिक्षक को एक ही साथ अलग-अलग कौशल स्तर वाले बच्चों के साथ काम करना होगा।

मेरी कक्षा में, भाषा सीखने के विभिन्न स्तर स्पष्ट हैं। एक समूह चित्रों को पहचान सकता है, उनके नाम पुकार सकता है और अपने विचारों को कुछ शब्दों में व्यक्त करने की कोशिश कर सकता है। अगले स्तर के बच्चे मेरी सहायता से कुछ अक्षरों की पहचान कर सकते हैं, चित्र नामों की पहली ध्वनि का उच्चारण कर सकते हैं और मानक भाषा में अपनी राय सही ढंग से व्यक्त कर सकते हैं। तीसरे स्तर के बच्चे पाठ पढ़ सकते हैं, कहानियाँ सुना सकते हैं और कविताएँ सुना सकते हैं; वे अक्षरों और मात्राओं में भी अन्तर कर सकते हैं।

तीनों समूहों के साथ एक साथ काम करने के लिए कई प्रकार के संसाधन और कार्य योजनाएँ चाहिए होती हैं। मैंने देखा है कि शिक्षक उन विद्यार्थियों के साथ अधिक समय बिताते हुए दिखते हैं जो तेज़ी से सीखते हैं और चीज़ों को बेहतर ढंग से समझते हैं, जबकि जिन्हें वास्तव में अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है उन्हें बहुत कम समय दिया जाता है। मेरा मानना है कि यदि सभी शिक्षक इस प्रश्न पर विचार करें कि, *इन बच्चों को कक्षा स्तर तक आने में मदद करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ताकि वे भी सीखना शुरू कर सकें?* तो वे इन बच्चों के लिए सीखने-सिखाने की रणनीति विकसित करने पर ध्यान दे सकते हैं और उन्हें कक्षा में निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।

हम हरेक बच्चे के सीखने के तरीक़े और उसके कक्षा में व्यवहार को उनके साथ कक्षा में काम करते समय ही जान पाते हैं। विभिन्न समूह में सीखने के विभिन्न स्तर पर बच्चों के साथ काम करना ही शिक्षक का प्राथमिक कर्तव्य होता है। और इसके लिए निम्नलिखित चीज़ों का होना आवश्यक है :

1. बच्चों की किताबों का स्तर के अनुसार वर्गीकरण
2. फोटो कार्ड
3. शब्द कार्ड
4. कहानी कहता चित्र
5. अक्षर और मात्रा कार्ड
6. कहानी, कविता और चार्ट का संग्रह

7. कहानियाँ पढ़ने और कविता सुनाने का कौशल

8. सामग्रियों के उपयोग की समझ

उपरोक्त बिन्दु-8 के सम्बन्ध में यह देखा जाता है कि प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध होने पर भी अक्सर उसका उपयोग कम होता है या उपयोग कैसे किया जाना चाहिए इस पर समझ की कमी होती है। इस सम्बन्ध में मैं अपने कुछ काम साझा करना चाहूँगा।

सम्बन्ध निर्मित करना

जब बच्चे, जो सिर्फ़ 5 या 6 साल के होते हैं, एक नई तरह की व्यवस्था में जाते हैं तब स्कूल और इसके अन्दर की बाक़ी सब चीज़ें उन्हें अनजानी-सी लगती हैं। मैं उन्हें कहानियाँ और कविताएँ सुनाने और उनसे उनके परिवारों, उनके परिवेश और खेलों के बारे में बात करने से शुरुआत करता हूँ। इससे उन बच्चों की पहचान करने में सहायता मिलती है जो कक्षा में सहज महसूस करने लगे हैं और हम उन्हें बेहतर सीखने और कुछ नया सिखाने में मदद कर सकते हैं। कुछ बच्चों को विभिन्न कारणों से नए माहौल के साथ तालमेल बिठाने के लिए अधिक समय लगता है, इसका मुख्य कारण यह है कि वे नियमित रूप से स्कूल नहीं आते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में अपने शिक्षकों के प्रति पूर्ण विश्वास विकसित होता है।

पढ़ने का समय

मैं हर रोज़ 30 मिनट अपने विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाता हूँ। जिन बच्चों को पढ़ने में कठिनाई आती है, उन पर मैं विशेष ध्यान देता हूँ और उन्हें कहानियाँ और कविता सुनाता हूँ। मैं उन्हें बरखा सीरीज़ और लाइब्रेरी की अन्य मज़ेदार किताबें देकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश करता हूँ। और अगले दिन जो पढ़ सकते हैं वे उनके द्वारा पढ़ी गई किताब में से कहानियों को पूरे समूह को सुनाते हैं। कुछ विद्यार्थी जो मात्रा और अक्षर को पहचान सकते हैं, उन्हें पिक्चर और शब्द कार्ड की सहायता दी जाती है, ताकि वे बुनियादी अक्षर और ध्वनियों को पिक्चर कार्ड से खेलते हुए ख़ुद सीखना शुरू करें।

कक्षा-2 का एक विद्यार्थी जो सहायता के साथ केवल कुछ सरल शब्दों को पढ़ सकता था वह बरखा सीरीज़ की *मिली का गुब्बारा* से बहुत प्रेरित हुआ और उसने और भी दूसरी किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया। इन दिनों वह सुबह की प्रार्थना सभा में इतने अच्छे से पढ़कर सुनाता है कि वह सभी का सबसे पसन्दीदा कहानी सुनाने वाला बन गया है।

भाषा का काम

विभिन्न स्तर पर विद्यार्थियों के साथ एक साथ काम करना कठिन हो सकता है। इसलिए इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए शिक्षकों के पास एक योजना होनी ही चाहिए। कक्षाओं में विद्यार्थियों के साथ काम करने के लिए कई संसाधन उपलब्ध होने चाहिए जिनमें रीडिंग पोस्टर्स, कहानी–कविता के चार्ट, कहानी पट्टियाँ (स्टोरी स्ट्रिप्स), शब्द कार्ड, स्टोरी कार्ड आदि शामिल हैं।

28 विद्यार्थियों की मेरी कक्षा में, 7-8 विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से काम कर सकते हैं, जबकि कई पहली बार स्कूल आए हैं और उन्हें अक्षर और मात्रा पहचानने के लिए अभ्यास की ज़रूरत है। भाषायी नज़रिए से मैं लिखने, बोलने, सुनने और पढ़ने पर काम कर रहा हूँ। इसलिए, पूरी कक्षा के साथ-साथ छोटे समूहों में भी काम करना होगा।

कहानी : रानी भी

सामग्री : नरेटिव कार्ड, पिक्चर कार्ड, अक्षर कार्ड और मात्रा कार्ड

चरण-1 : मैंने कक्षा को एक कहानी पढ़कर सुनाई।

चरण-2 : फिर मैंने हरेक बच्चे को सवालों से बातचीत में शामिल किया, जैसे – आपके परिवार में कौन-कौन है? आप किसके साथ खेलते हो? आपके छोटे भाई-बहन क्या करते हैं? क्या वे आपके साथ स्कूल आना चाहेंगे?

महत्त्वपूर्ण बात है सवालों को पढ़कर सुनाई गई कहानी से जोड़ना और विद्यार्थियों को उससे सम्बन्ध बनाने में मदद करना। जो बच्चे कक्षा में ज़्यादा बात नहीं करते, शिक्षक को उनसे जवाब लेने का प्रयास करना चाहिए और यदि वे फिर भी झिझक रहे हों तो उन्हें जवाब देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जो विद्यार्थी विस्तार से समझ नहीं पाए हों और ग़लत जवाब देते हों उन्हें फिर से सोचकर जवाब देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

चरण-3 : एक समूह को अपने आप से कुछ लिखने का कार्य दिया गया जबकि दूसरे समूह को अक्षरों से शब्दों को बनाने के लिए कहा गया। कुछ बच्चों को पिक्चर कार्ड दिए गए और उन्हें पिक्चर कार्ड में दर्शाई गई वस्तु के नाम की पहली ध्वनि पहचानने के बाद एक अक्षर पहचानने को कहा गया।

चुनौतियाँ और संकल्प

मिश्रित क्षमता वाली कक्षा में शिक्षक को तरह-तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कुछ विद्यार्थियों की गतिविधियाँ और व्यवहार उनके सीखने में रुकावट पैदा करते

हैं। इसके कारण शिक्षक उन बच्चों से बात करने में बहुत समय ख़र्च कर देते हैं जिससे पूरी कक्षा बाधित होती है और शिक्षक की उस दिन की रणनीति विफल हो जाती है।

कुछ विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति उनके सीखने में बाधा बनती है जिससे शिक्षक को उन पर अधिक समय देने की ज़रूरत पड़ती है। कई बच्चे स्कूल के अलावा घर पर भी पढ़ते और सीखते हैं। हालाँकि उनमें से कुछ बच्चों के पास घर पर पढ़ने का समय या सहायता उपलब्ध नहीं होती है, यहाँ तक कि वे अपना होमवर्क तक नहीं कर पाते हैं।

इन चुनौतियों का सबसे सही हल यह है कि शिक्षक को बच्चे की पृष्ठभूमि का पता हो। यह जानने के लिए शिक्षक को बच्चों के माता-पिता के सम्पर्क में रहना चाहिए। विद्यार्थियों का रिकॉर्ड रखना और उनके साथ काम करना आसान होगा यदि शिक्षक समुदाय में जाए और बच्चों के माता-पिता से मिले और उनके बारे में अधिक जानकारी जुटाए, जैसे – बच्चे के माता-पिता क्या करते हैं? वे बच्चे के साथ कितना समय बिताते हैं? बच्चे घर पर क्या करते हैं? अभिभावक किस हद तक बच्चे की पढ़ाई में मदद करते हैं।

अभिभावकों को स्कूल और कक्षा के नियम के साथ-साथ उनके बच्चों का बर्ताव भी पता होना चाहिए, जिसे शिक्षक को समय-समय पर अभिभावकों के साथ साझा करना चाहिए। अभिभावकों को स्कूल में होने वाली प्रगति और बदलावों के बारे में पता होना चाहिए और समय-समय पर उनके बच्चे की सीखने की ताज़ा स्थिति के बारे में भी बताया जाना चाहिए।

स्कूल के समय के बाद

चार्ट बनाने और अगले दिन की कार्ययोजना बनाने के लिए हमारे पास एक घण्टे का समय होता है। इसके अलावा, शिक्षक के पेशेवर विकास, स्कूल संस्कृति और मासिक योजना एवं समीक्षा सहित स्कूल से सम्बन्धित कार्यों को पूरा करना होता है। हम आकलन प्रपत्र और विद्यार्थियों की प्रोफ़ाइल बनाते हैं और उनकी नोटबुक की जाँच करते हैं। इसके बाद जो काम इस दौरान पूरा नहीं हो पाता, उसे मैं घर पर पूरा करता हूँ।

Endnotes

i Barkha Series: https://ncert.nic.in/dee/barkha-series.php?ln=en

सतवीर सिंह चौहान 2016 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, सिरोही, राजस्थान में पढ़ा रहे हैं। उनके पास भूगोल में स्नातकोत्तर और बीएड की डिग्री है। इसके पहले उन्होंने 6 वर्ष तक विभिन्न निजी विद्यालयों में प्राथमिक और उच्च दोनों कक्षाओं में पढ़ाने का कार्य किया है। उनसे *Satvir.chauhan@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : प्रियेश गुप्ता **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय